

जैन दर्शन के अनुसार सम्यक् चरित्र के पालन हेतु आचरण

जैन दर्शन में सम्यक् चरित्र के पालन हेतु निम्न आचरण हैं—

- (1) पाँच समितियों अथवा सावधानियों का पालन करना चाहिए— (क) हिंसा से बचने के लिए निश्चित मार्ग से जाना, (ख) नम्र और अच्छी वाणी बोलना, (ग) उचित शिक्षा लेना, (घ) वस्तुओं को उठाने और रखने में सतर्क रहना, (ङ) शून्य स्थानों में मल-मूत्र करना।
- (2) व्यक्ति को अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर रोक लगानी चाहिए। जैनों ने इसे 'गुप्ति' कहा है। 'गुप्ति' तीन है: (क) कार्य गुप्ति—शरीर का संयम, (ख) काक्गुप्ति—वाणी का नियन्त्रण, (ग) मनो गुप्ति—मन का संयम। इसप्रकार मन, वचन तथा कर्म का संयम आवश्यक है।
- (3) जैन के अनुसार मनुष्य को धर्मों का पालन करना चाहिए। ये धर्म दस हैं—सत्य, शौच, तप, संयम, त्याग, विरक्ति, मार्दव (Humility), सरलता तथा ब्रह्मचर्य।
- (4) जीव और अजीव के स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है। चिन्तन के लिए जैन ने भाव और संकेत किया है, जिन्हें "अनुपेक्षा" कहते हैं।
- (5) सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास आदि से प्राप्त दुःख को सहन करने की मनुष्य में क्षमता होनी चाहिए। इसे "परिषिद्धि" कहा गया है।
- (6) पंच महाव्रत का पालन करना चाहिए। पंच महाव्रत को सभी आचरणों से अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। बौद्ध धर्म में इसे "पंचशील" कहा गया है। जैन-दर्शन के पंच महाव्रत निम्नांकित हैं:-

- (क) **अहिंसा:** जैनों के अनुसार जीव का विकास प्रत्येक द्रव्य में है। अतः, अहिंसा का अर्थ है सभी प्रकार के जीवों की हिंसा का परित्याग। अहिंसा अधर्म है। अहिंसा निषेधात्मक आचरण ही नहीं, अपितु भावात्मक आचरण भी है। अहिंसा का अर्थ केवल जीवों की हिंसा का ही त्याग करना नहीं, अपितु उनके प्रति प्रेम का भाव प्रदर्शित करना भी अहिंसा ही है। हिंसात्मक कर्मों के सम्बन्ध में सोचना तथा दूसरों को हिंसात्मक कार्य के लिए प्रोत्साहित करना भी हिंसा ही है।
- (ख) **सत्य:** सत्य का अर्थ है असत्य का परित्याग, किन्तु मधुर वचनों का प्रयोग करना भी सत्य ही है। सत्य व्रत का पालन करने के लिए लोभ, क्रोध, भय तथा पर-निन्दा का परित्याग करना आवश्यक है।
- (ग) **अस्तेय:** अस्तेय का अर्थ है चोरी नहीं करना। जैनों के मतानुसार धन जीवन का बाह्य अस्तित्व है। अतः, किसी के धन का अपहरण करना उसके जीवन के अपहरण करने के समान है।
- (घ) **ब्रह्मचर्य:** ब्रह्मचर्य का अर्थ है—वासनाओं का त्याग करना। जैन दर्शन के अनुसार मानसिक अथवा बाह्य, लौकिक अथवा पारलौकिक, स्वार्थ अथवा परार्थ, सभी कामनाओं का पूर्ण त्याग ही ब्रह्मचर्य है।
- (ङ) **अपरिग्रह:** अपरिग्रह का अर्थ है विषयासक्ति का परित्याग। सांसारिक विषयों से निर्लिप्त रहकर ही मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

इसप्रकार, जैन-दर्शन के अनुसार मन, वचन तथा कर्म से उपरोक्त सिद्धांतों को अपनाकर मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। मोक्ष की अवस्था में जीव अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करता है। मोक्ष की अवस्था में दुःखों के विनाश के साथ-साथ आत्मा को अनन्त ज्ञान, अनन्त शक्ति, अनन्त दर्शन तथा अन-

डॉ. श्रवण कुमार मोदी

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया, पूर्वी चम्पारण
मो०-9608685335

Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com